कुम्भस्नाने महाफलम्

विदुषामनुचर
गोपीनाथ पारीक गोपेश'
अध्यक्ष राजस्थान आयुर्वेद विज्ञान परिषद्
एवं साहित्य-सरोवर संस्था , जयपुर

इस विशाल देश की संस्कृति का नाम सनातन संस्कृति है क्योंकि यह संस्कृति किसी मानव द्वारा स्थापित नहीं है, अपितु सनातन ईश्वर द्वारा स्थापित है। इस संस्कृति के साथ हिन्दु शब्द भी जोड़ दिया गया है, अतः इसे हिन्दू संस्कृति भी कहते हैं। हिन्दू की विस्तृत व्याख्या में यह परिभाषा भी समाहित है-

भूतानुकूल्यं भजते स वै हिन्दुरिति स्मृतः ।
हिंसया दूयते चित्तं तेन हिन्दुरितीरितः ॥

अर्थात् जो सदा सब जीवों के अनुकूल बर्ताव को अपनाता हो और जिसका चित्त हिंसा से दुखी होता हो, वह हिन्दू कहा गया है।

श्रीयुत सी० राजगोपालाचारी ने तो इस हिन्दू संस्कृति को विश्वसंस्कृति तक कहा है - हिन्दू संस्कृति भारतीय संस्कृति है और भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण जगत् की संस्कृति है। किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट पुरुषों में विचार, वाणी एवं क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता है, उसी का नाम संस्कृति है। विचार, वाणी एवं क्रिया के जिस आदर्श को हिन्दू संस्कृति के नाम से पुकारा जा सकता है, उसका स्वरूप है उपनिषदों एवं इतिहासों में दिये गये शिष्ट उपदेशों के अनुकूल जीवन को बनाना।

धर्म और जीवन का मेल हिन्दू संस्कृति के आग्रह का विषय है। धारणात्मक नियमों की समुचित संज्ञा ही धर्म है। धर्म और चैतन्य का धरातल एक ही होने से इस हिन्दू संस्कृति के स्थान पर धर्म शब्द का भी प्रयोग हुआ है।

हमारे सनातन हिन्दू धर्म में व्रतों का एवं पर्वो का बड़ा महत्त्व है। ये व्रत-पर्व हमें अन्तर्मुख होने की प्रेरणा प्रदान

करते हैं। व्रत जो प्रायः व्यक्ति परक होते हैं और पर्व प्रायः समूह परक होते हैं। व्रतों से स्वास्थ्य लाभ के अतिरिक्त मानसिक शान्ति और ईश्वर की भक्ति प्राप्त होती है वहाँ पर्वों से उक्त लाभों के अतिरिक्त आनन्द और उल्लास का भी परिलाभ मिलता है। भारतीय पर्वों में इस आनन्द और उल्लास की परिव्याप्ति होती है। ये पर्व सम्पूर्ण समाज में एक नई चेतना का संचार करते हैं। ये पर्व सामूहिक उल्लास से परिपूर्ण होने के कारण जीवन की नीरसता को दूर कर उसे आनन्द से परिपूर्ण कर देते हैं। ये पर्व हमें हमारे उच्च दायित्वों का निर्वाह करने की भी प्रेरणा देते हैं। इन पर्वों से आचार एवं विचार में शुचिता आती है। आचार का अर्थ सामाजिक आचारण है तो विचार का अर्थ मान्यतायें हैं। **'संगच्छध्वं संवदध्वं संनो मनांसि जानताम्'।** यह वेद वाक्य सामूहिक आचारविचारों की भावना का उद्घोष है। अतः हमें इन पर्वों को आदरपूर्वक स्वीकार करना चाहिये। जो इनका सम्मान नहीं करता उसे अधम कहा गया है-

स्वस्य देशं तथा पर्वं भाषां धर्मं च संस्कृतिम् ।
सम्मानयति नो यस्तु ततः कोऽस्त्यधमाधमः ॥

-राष्ट्रस्मृति

पर्व का अर्थ है - गाँठ अर्थात् सन्धिकाल । हिन्दू संस्कृति के पर्व सदा सन्धिकाल में ही पड़ते हैं। पूर्णिमा, अमावस्या और संक्रान्ति कालों को शास्त्रों में पर्व कहा गया है क्योंकि ये सब सन्धिकाल है। सूर्य-संक्रमण में परिवर्तन होने से संक्रान्ति को भी पर्व कहा गया है। वैसे तो सूर्य का बारह राशियों में क्रमशः संक्रमण करने के कारण बारह संक्रान्ति काल होते हैं किन्तु इनमें कर्क संक्रान्ति एवं मकरसंक्रान्ति का विशेष महत्त्व है। इनमें कर्कसंक्रान्ति सूर्य के दक्षिणायन और मकरसंक्रान्ति सूर्य के उत्तरायण होने की द्योतक है।

दक्षिणायन में रात्रि बड़ी होने से अन्धकार की अधिकता होती है और उत्तरायण में दिन बड़े होने से प्रकाश की अधिकता होती है। शास्त्रों में प्रकाश को देवतत्त्व तथा अन्धकार को असुर तत्त्व माना गया है अतः उत्तरायण को देवताओं का दिन तथा दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि कहा गया है। इस प्रकार उत्तरायण प्रकाश प्रधान होने से शुभ कार्यों के लिए प्रशस्ततर है। शरशय्या पर पड़े हुये भीष्म पितामह प्राण त्यागने हेतु उत्तरायन की प्रतीक्षा करते रहे। मकरसंक्रान्ति जो इस उत्तरायन की संक्रान्ति है, देवताओं के दिनारम्भ का दिवस होने से सर्वोत्तम मानी जाती है। इस दिन तीर्थ स्नान और दान-पुण्य करने का बहुत महत्त्व है।

प्रत्येक सन्धिकाल जहाँ पर्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है वहाँ शरीर की दृष्टि से भी सावधानी रखने योग्य है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में दो ऋतुओं में से एक ऋतु का अन्तिम सप्ताह और अन्य ऋतु का प्रथम सप्ताह कृति सन्धि नाम से

वर्णित है। इस ऋतु सन्धिकाल में क्रमशः पूर्व ऋतु की विधि का त्याग और क्रमशः दूसरी ऋतु की विधि के सेवन का निर्देश है। ऐसे समय संयम की विशेष आवश्यकता होती है। इसी प्रकार उक्त भारतीय पर्वों में भी संयम, संस्कार और समर्पण के भावों का होना आवश्यक है। इनके बिना ये पर्व निष्फल हो जाते हैं।

शास्त्रों के अनुसार ये पर्व तीन प्रकार के होते हैं - नित्य, काम्य और नैमित्तिक। दीपावली, होली आदि नित्य पर्व कहे जाते हैं। किसी कामना विशेष को लेकर किये गये पर्व काम्य होते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ पर्व ऐसे होते हैं जो किसी निमित्त से आते हैं ये नैमित्तिक होते हैं। ये किसी योग विशेष से अथवा किसी घटना से पड़ने वाले पर्व नैमित्तिक होते हैं, - ग्रहण, कुम्भ आदि ऐसे ही पर्व हैं। इनमें कुम्भ दिव्य पर्व होने से महापर्व है, जो सूर्य, चन्द्र एवं वृहस्पति के विशेष संयोग पर आता है।

कुम्भपर्व एक सार्वभौम महापर्व है। कुम्भमेला भारत का सबसे बड़ा मेला है। कुम्भ का अर्थ घट कलश के अतिरिक्त विश्वब्रह्माण्ड भी है। अतः जहाँ विश्व भर के धर्म, जाति, भाषा आदि का एकत्र समावेश हो वहीं कुम्भ मेला है।